अस्थि मज्जा प्रत्यारोपण से एचआईवी का इलाज

दो व्यक्तियों को अस्थि मज्जा की स्टेम कोशिकाएं प्रत्यारोपित की गई थीं। इन व्यक्तियों को 'बोस्टन मरीज़' के छद्म नाम से जाना जाता है। दोनों ही एचआईवी संक्रमित थे और इसके लिए रिट्रोवायरस-रोधी औषधि का सेवन भी कर रहे थे। अस्थि मज्जा प्रत्यारोपण के बाद पता चला है कि इनके शरीर से वायरस का सफाया हो गया है। फिलहाल इन्होंने क्रमशः 15 व 7 सप्ताह से एचआईवी-रोधी दवाइयां नहीं ली हैं और वायरस ने फिर से सिर नहीं उठाया है।

इससे पहले भी इस तरह के उपचार के मामले प्रकाश में आ चुके हैं। जैसे इसी साल की शुरुआत में 14 वयस्कों के बारे में पता चला था कि वे वायरस से कामकाजी स्तर पर मुक्त हो चुके हैं - इसका मतलब यह है कि उनके शरीर में कुछ वायरस तो हैं मगर निष्क्रिय हैं।

अब तक ऐसा माना जा रहा था कि ये कामकाजी स्तर के उपचार रिट्रोवायरस-रोधी औषधियों का शीघ्र उपयोग शुरू करने के परिणामस्वरूप हुए हैं। यानी इन लोगों ने वायरस के शरीर में पैर जमाने से पहले ही दवाइयां लेना शुरू कर दिया था। मगर बोस्टन मरीज़ों के बारे में लगता है कि उनके उपचार में अस्थि मज्जा प्रत्यारोपण का निश्चित योगदान है। इसके साथ रिट्रोवायरस-रोधी दवाइयों का उपयोग जारी रखा गया था ताकि नव-निर्मित प्रतिरक्षा कोशिकाएं वायरस से संक्रमित न होने पाएं।

इस पूरे मामले की छानबीन करने वाले बोस्टन के वीमेन्स हॉस्पिटल की टिम हेनरिच ने बताया है कि इन व्यक्तियों को अस्थि मज्जा प्रत्यारोपण तीन-चार साल पहले दिया गया था और आज करीब 15 व 7 सप्ताह से दवाइयां बंद करने के बाद भी वे वायरस मुक्त हैं। ये दोनों मरीज़ एचआईवी पॉज़िटिव थे और इन्हें एक किस्म के रक्त कैंसर (हॉजकिन्स लिम्फोमा) की वजह से भर्ती किया गया था और उसी के इलाज के लिए अस्थि मज्जा प्रत्यारोपण भी किया गया था।

वैसे हेनरिच का मत है कि ये परिणाम काफी उत्साहजनक हैं मगर अभी यह नहीं कहा जा सकता कि ये व्यक्ति पूरी तरह ठीक हो गए हैं। अभी एक साल तक लगातार निगरानी के बाद ही इस सम्बंध में कुछ कहा जा सकेगा कि इनकी स्थिति क्या है और प्रभाव कितना स्थायी है। ***(स्रोत फीचर्स)***